ISSN: 2393-8048
International Conference of Education New Policy Relative to Computer
Venue: Sri Vinayak Mahavidhalya, Sri Vijaynagar, Rajasthan
23 May 2019

हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन और बदलते सामाजिक मूल्य

पृथ्वी राज, विधार्थी, हिंदी विभाग, महाराजा गंगा सिंह विशवविद्यालय, बीकानेर

सारांश

हिंदी उपन्यासों में ग्रामीण जीवन भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। ग्रामीण समाज में समय के साथ आए परिवर्तनों ने पारंपरिक मूल्यों, पारिवारिक संबंधों, जातीय संरचनाओं, आर्थिक व्यवस्था और जीवन-शैली को प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी उपन्यासों में चित्रित ग्रामीण जीवन तथा बदलते सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना है। हिंदी उपन्यासकारों ने ग्रामीण समाज की गरीबी, कृषि संकट, सामाजिक असमानता, जातिगत संबंधों, पलायन, शिक्षा, आधुनिकीकरण और बदलती पारिवारिक संरचना को विविध रूपों में प्रस्तुत किया है। आधुनिकता और वैश्वीकरण के प्रभाव से ग्रामीण जीवन में जहाँ नए अवसर उत्पन्न हुए हैं, वहीं परंपरागत सामाजिक संबंधों और मूल्यों में भी परिवर्तन आया है। यह अध्ययन ग्रामीण समाज के साहित्यिक चित्रण के माध्यम से परंपरा और आधुनिकता के बीच उत्पन्न तनाव को समझने का प्रयास करता है। निष्कर्षतः, हिंदी उपन्यास ग्रामीण भारत के बदलते सामाजिक यथार्थ का संवेदनशील एवं प्रभावी दस्तावेज प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य शब्द : हिंदी उपन्यास, ग्रामीण जीवन, सामाजिक मूल्य, ग्रामीण समाज, आधुनिकीकरण, सामाजिक परिवर्तन, भारतीय गाँव